प्रथम प्रयास

कवितावल्ली

अर्थात्

स्फुट विषयों पर कुछ कवित्तों का संग्रह

लेखक—

जी० आर० "भक्त" विशारद

प्रकाशक—

पं० राजाराम त्रिपाठी, काशी

मुद्रक—

पं० आत्माराम शर्मा

आर्य्य प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव, काशी।

१९८१ विक्रमाब्द

प्रथमावृत्ति]　　　　[मूल्य ।)

समर्पण

माता, तव पद-पद्म में, भ्रमर-'भक्त' सद् दास ।
'कवितावली' निज करत, अर्पन प्रथम प्रयास ॥



निवेदन

पाठक वृन्द,

इस छोटी सी पुस्तिका के लिखने का मन्तव्य यही है कि इससे छोटे छोटे बालक-विद्यार्थियों को कुछ शिक्षा मिले, उनको स्मरण करने की कुछ असुविधायें दूर हों तथा साथ ही साथ उनका मनोरंजन भी होता रहे। यदि पाठकों को यह थोड़ी भी प्रिय हुई तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा और आगे भी समय-समय पर विविध छन्दों की आवलियाँ (दोहावली, पद्यावली, सारावली, प्रभृति) लिख कर उनकी तथा मातृ-भाषा की सेवा करता रहूंगा।

चैत्र पूर्णिमा १९८१

भवदीय
—"भक्त"

श्रीगणेशाय नमः

कवित्तावली

गणेश-स्तवन

गरद मिलावत पलक माँझ पाप-नग,
दुःख-गढ़ ढाहत न लावत अबार है।
नेरे नहिं रखत कुकर्म-तरु बड़े घने,
सोखत अविद्या-सिन्धु रहत न पार है॥
सरन गये पै भव-स्रम कर नहिं बस,
विद्या-कला-गुन सब होत कर-तार है।
जीतै जम एकहू जो मोदक चढ़ावै रुजी
'भक्त' गज-मुख को प्रनाम बार-बार है॥१॥

सरस्वती-स्तवन

सब सुख रस गुन कला विद्या वाके पास,
निसि-दिन जाके बसौ बानी पर बानी जू।
रक्खौ जापै हाथ ताको लखि डरैं हरि-हर,
विधि हू विमोह जात नित्य-बीन-पानी जू॥
स्वबस रहति सदा इच्छित रखति विस्व,
रमा-उमा जोहैं मुख तेरो विधि-रानी जू।
तीनों लोक जगै जस-दीप बिनु तेल-बाती,
'भक्त'-हिय बास करो नित्य हंस-यानी जू॥२॥

विष्णु-बल

एक मुखवारो पान करत जो बायु नित,
एतो बिष-धर होत हरि लेत प्रान को ।
तेरो सेज सेष है सहस-मुखवारो बड़ो,
छीर-सिन्धु बास करै छीर ही है पान को ॥
तापै कालकूट की भगिनि रहै संग नित,
मधु-रस प्यावै जो बिनासती जहान को ।
एते पै है तनु-दुति नील-कंज के समान
'भक्त' धनि चक्र-पानि ऐसो भागवान को? ॥३॥

शंकर-शक्ति

अँग अँग लिपटे भुजंग हैं बिषैले ऐसे
जाके साँस लेत सार हू भसम होइ जात ।
जग को जराइ छार करत जू कालकूट
ताहि पान कियो मोद हिय मैं नहीं समात ॥
एते पै अघायो नहीं पियो गाँजा-भाँग नित,
खात हौ धतूर बिष-फल अरु आक-पात ।
'भक्त' धनि शिव तुम सम तुम समरथी
आज लौं लखात कुन्द-इन्दु-करपूर गात ॥४॥

श्रीगुरुदेव जू की बानी

तम को तमारि जैसे गज को गजारि जैसे
दीनन की दीनता को जैसे महादानी है ।
रोगन को औषधि औ कृषि को तुषार जैसे

लोहन को जंग जैसे पावक को पानी है ॥
पापन को पुण्य जैसे जीवन को विष जैसे,
माखिन को घृत जैसे कविन बखानी है ।
तैसे शिष्य-जनन की मूढ़ता-कुबुद्धिता को,
नासिबे को 'भक्त' गुरुदेव जू की बानी है ॥५॥
लोहन को पारस ज्यों आयुष को अमृत ज्यों,
सागर के सीपन को स्वाती कर पानी है ।
वस्त्रन को साबुन ज्यों चाकर को स्वामिन ज्यों,
पत्रक पलाश को जो पान हीं सो मानी है ॥
राज्य को सुराय है ज्यों यश को पराक्रम ज्यों,
बाँसन के फाँसन को मिसिरी बखानी है ।
'भक्त' त्यों सुशिष्यन की बुद्धि को बढ़ाइबे को,
शंकर-समान-गुरुदेव जू की बानी है ॥६॥

गाँधी में दशावतार

मच्छे प्रभु नैनन में कच्छपै जू सिर राजैं,
बानी में बराहै जूने गेह को बनायो हैं ।
पन में नृसिंह 'भक्त' बामनै सु-इच्छा महँ,
पाप-नृप-नासन परसु-धर्र आयो हैं ॥
रामै रहैं मन माँह करन में कान्ह नित,
बौद्धै-रूप व्रत-हित जेल में गँवायो हैं ।
आस जो भविष्य की सो कल्किै रूप रोम-रोम,
याही बिधि गाँधीदसौ रूप आयो-युत हैं ॥७॥

अनय का अन्त

नय के बढ़े ते जिमि उपज को नास ि त,
भय के बढ़े ते जिमि साहस ह ाति को ।
रबि के बढ़े ते जिमि रजनी को नास ह त,
तप के बढ़े ते जिमि सुख काम रति को ॥
त्याग के बढ़े ते जिमि स्वारथ को नास होत,
आलस-बढ़े ते जिमि जीव-द्रुत ाति को ।
रोग के बढ़े ते जिमि सु-तनु को नास होत,
'भक्त' त्योंही अनय बढ़े ते न गति को ॥८॥
माँझा के बढ़े ते जिमि जल-जीव नास होत,
बय के बढ़े ते जिमि इन्द्री-द्रुत ाति को ।
तोष के बढ़े ते जिमि लालच को ना होत,
क्रोध के बढ़े ते जिमि भक्ति-ज्ञा । जति को ॥
प्रेम के बढ़े ते जिमि भेद-भाव नास होत,
पति सों अरुचि बढ़े जिमि सत सति को ।
फूट के बढ़े ते जिमि सु-कुल को नास होत,
'भक्त' त्योंहीं अनय बढ़े ते न पति को ॥९॥

सूर्यदेव

तेज को निधान है कि गोला बड़ो आग को कि,
हरि को सुचक्र है कि इन्द्र जू को ढाल है ।
चक्षु है बिराट जू को गगन-सुरंग है कि,
स्वर्ग को कपाट है कि रस्मिन को जाल है ॥

गोल वायु-यान है कि तप्त-स्वर्ण-कूट है कि,
प्रभु को पदक कि धरम-सिर-पाल है।
प्रकृति को कन्दुक कि ज्वाला-मुखी-मुख है कि,
'भक्त' सूर्यदेव पिण्डरूप इहि काल है ॥१०॥

सूरसागर के पद

कविन-कुमुदन को काव्य-कला-निधि पूरो,
'भक्त'-न भ्रमरन रसाल-कोकनद हैं।
ग्यानिन को ग्यान-गुच्छ साधुन को सिद्ध-फल,
सत्य-गुरु उनके जो बुद्धि के बरद हैं॥
मूढ़न-विमूढ़ता-तिमिर के तमारि-तेज,
दीन-दुख-गिरि वज्र सों करैं गरद हैं।
ऊख सु-मयूख औ पियूख अधरामृत सों,
अमित मधुर सूर-सगर के पद हैं ॥११॥

तुलसी की चौपाई

जाह को सवादु मिलै मनहुँ बतासा चखै,
ज्यों-ज्यों पढ़ै त्यों-त्यों रस बाढ़ै अधिकाई है।
मूढ़न सुगम अति, अगम सु-पंडित को,
ज्यों-ज्यों आगे बढ़ै त्यों-त्यों अन्तर सवाई है॥
सबै निगमागम पुरानन को सार यामें,
शिव-चतुरानन के मन अति भाई है।
अपने समान आपु राम-नाम हवर-स्वर,
काव्य-कोष-कुञ्जिका तुलसी की चौपाई है॥१२॥

दीपावली

गृह-द्वार स्वच्छ देखि हिय अनुमान हो ।,
जनु सुभ्र रूप धरि सुभ्रता ‌ ‌ ‌ ‌ायो है ।
थल-थल दीप की अवलि तहँ राजै आ ,
जाहि लखि मों मन अनेक मोद आयो है ॥
हंसन की पाँति है कि हीरक जराऊ ‌ ‌ ‌ रो,
'भक्त' कैधों घन घन मोती ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ायो है ।
चन्द झर्यो अमिय कि राजत खद्योत ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌ ‌य,
कैधौं नभ-तारे विधि महि मैं ‌ ‌ ‌ ‌ायो है ॥१३॥

हास्यानुराग की प्रत्यक्ष मूर्त्ति

देखौं आजु नौल-धौल बसन सुसाजि ‌ ‌ ‌ग,
फाग-अनुराग बस कहूँ न स ‌ ‌ ‌ात हैं ।
भाल-गाल पै गुलाल औ अबीर मलि-म ‌ ले,
कोऊ निज पदिन तें हँसि बत ‌ ‌ ‌त हैं ॥
बहु लाल रंग में नहाइ भंग पीके खूब.
झूमि-झूमि गावत सु-झूमर-जम ‌ ‌ ‌ हैं ।
मानों हास्य-अनुराग धरिकै अनेक रूप
इत-उत मंडली बनाइ दरसात ‌ ‌ ‌ ॥१४॥
सोचती हैं राधिका दिवाभिसारिका के साज,
आके आज ब्रजराज खेलिहैं क ‌ ‌ ‌सु-फाग ।
ताही छिन नौल-धौल बसन सुसाजि- ‌ ‌ाजि,
ग्वाल-बाल संग लैके आयो हरि सानुराग ॥

चलन लगी जू पिचकारी दुहूँ दिसि खूब,
सुर-सुर-बधू लखि मन में सिहान लाग।
मानों दुहुँ अंगन तें निकस्यो है फूटि-फूटि,
जीरन भयो जो मन हास्य अरु अनुराग ॥१५॥

सत्याग्रह का एक दृश्य

बलकि-बलकि सब बालक कहत हम,
बार-बार अब न अबार लौं बिचारिहौं।
तरुन-तरनि तें तरुन हो तरल-मुख,
गाजिके कहत चित-दुचित न धारिहौं॥
जरठ कहत हठ हमहूँ न करि-करि,
बार-बार स्वान-इव जाइक पुकारिहौं।
अबला कहति बला एकहू रहेगी नाहिं,
हौंहूँ कर लै कृपान देस-हित वारिहौं ॥१६॥

सत्य-स्वराज

अन्न-जल-वस्त्र निज करके अधीन जब,
भारत-निवासी स्वावलम्बित रखेंगे ताज।
पालेंगे अहिंसा-धर्म तन-मन-धन से व,
वर्ण और आश्रमानुसार ही करेंगे काज॥
छूत औ अछूत से भी शुद्ध-सत्य प्रेम कर,
रखेंगे स्वदेशी व्यवहार सभी साज-बाज।
देश में सुराज राम-राज के समान होगा,
'भक्त' जी मिलेगा तब शीघ्र ही गया स्वराज ॥१७॥

भारत कब उन्नत होगा।

'राजनीति' 'धर्मनीति' सकल 'समाज ीति',
मृत्तिका समान रहै हिन्द-ज कर में।
असन-बसन-यान निज के सभी ही क ज,
कारबार-व्यवहार देसी प्रति र में॥
'विद्या-कला-प्रेम' 'देसप्रेम' 'धनप्रेम' र,
'जाति-प्रेम' देख पड़ै सभी नार -नर में।
पाप-गिरि गाज गिरे दुःख-बन आग ो,
'भक्त' शत्रु होवें सब छार पल- र में॥१८॥

मुक्ति-साधन

कछु कारीगरन ने दो सौ बरिसों में ि ले,
सूतन को जाल एक रुचिकै ब यो हैं।
करिकै जुगुति कूट ताहि तेरे बन डारि,
तेरी सिरी-सिंहिनी को खूब ही ंसायो हैं॥
बीर बर भूषन अछत, बिनु दाना-पानी,
बन-महारानी जू के प्रान कंठ अ गो हैं।
दन्त करि तेज मिलि काटैं सबै एक बा
मुक्ति को उपाय यही 'भक्त' तो ब ायो हैं॥१९॥

चेतावनी

कहत पुरान वेनु चलिकै कुचाल नस्यो,
'देसभक्त'-'राजभक्त' प्रजन के र तें।
दसो दिसि दसौ सिर दससिर को न ब ो,
केवल कुनीति ही ते रामचन्द्र-श तें॥

कंस-सिसुपाल से नृपाल को गोपाल बधे,
कितने कुचाली अन्त पायो हलधर तें ।
करिये अनीति नाहिं पाइ प्रभुता को कोऊ,
'भक्त' कर जोरि कहैं सभी नारी-नर तें ॥२०॥

बिगड़ी बात

देखि देस दीन दीनता को दूर करिबे को,
तपत सुसाधु सब कारागार दिन-रात ।
नारसिन पानी पी-पी प्रान को जियावैं नित,
बालक बिचारे देखु द्वार-द्वार बिललात ॥
अजहूं भलो है चेतु सीख सुनि मूढ़राज,
रावन-सरिस जनि करु खर-उतपात ।
काँच को कलस चूर-चूर करि जोरै कौन,
'राजाराम' भाखैं साँच बिगरी बनै न बात ॥२१॥

हठ

नात सुनि नात भये भाई के न भाई मन,
सुत सून गयो जाइ आलस-भवन में ।
पतनी कहति चाहे पत नीके रहे नाहिं,
जान देहौं, नहिं जान देहौं तोहिं रन में ॥
कर में करक चख फरकन में फरक,
हत्थियार हत्थि-यार छूटे एक छन में ।
घन घिरि आये घन-रिपु दौरि आये पास,
प्रान को पयान आज देख्यो हठपन में ॥२२॥

धर्म-महत्त्व

छबि बिनु चन्द जैसे तेज बिनु भानु जैसे,
जल बिनु सरि-मीन-मुक्ता अ र घन है ।
जैसे मनि-सुण्ड बिनु ब्याल बिनु भक्ति मूर्त्ति.
साहस-सुसक्ति-सत्य-बल बिन पन है ।।
सिंह बिनु बन जैसे राजा बिनु राज से,
दान-दया-देव-सेव बिनु जैसे धन है ।
प्रान बिनु तनु जैसे सुगति को प्राप्त त,
'भक्त' त्यों धरा पै बिनु धर्म नृ जीवन है ।।२३।।

बैर-फूट

परम प्रतापी परतापी दससिर जैसो,
रह्यो तैसो जानत जहान सुबहा न है ।
कंस हू को बिरद बड़ाई सम वियो ना है,
गाई गुन-गाथा जाको पूरा न पु ान है ।।
कुरु-कुल कहै को जाहि ऐन-मैन-तनु-म न,
भूति-नीत-धनु-बल-बिद्या-किरव न है ।
सबही सँहार्यो है बरन चारै "बैर-फूट .
'राजाराम' ताहि तजु तनिकों जो ज्ञान है ।।२४।।

पातिव्रत का प्रभाव

व्रन तें दुखित एक बालम पतिव्रता के,
अंक में असंक सोयो सुखित स र सों ।
ताही छिनु वाको बाँको बालक बिनोद- प,
अगिनि-अगार आनि पर्यो बिनु ीर-सों ।।

सोचती सती न जहाँ पैहों नहिं पूत-प्रान,
　　प्रान-पति जाग उठिहैं जो जैहों पीर सों ।
लखि दुचिताई वाकी शीतल कृशानु भयो,
　　नव जलजात जनु 'राजाराम' नीर सों ॥२५॥

होनहारी

कूप तें निकालती हैं दोऊ जल-वैभव को,
　　सूखे-रंक थल-नर पानिप बढ़ावतो ।
दोऊ लै रहट-भाग्य यंत्र-नरकृत-फल,
　　एकै करै नीचे एक ऊपरै चढ़ावतो ॥
एक को अधार बैल एक निराधार रहै,
　　एक कहि देत काल एक न बतावतो ॥
एक मोल मिलै एक नित अनमोल रहै,
　　यातें छोनिहारी होन-हारी सों जतावतो ॥२६॥

त्रिकोटि

सत[1] रज[2] तम[3] औ परशुराम[1] रामचन्द्र[2],
　　बलराम[3] सीतल[1] सुगंध[2] मन्द[3] मानिये ।
संचित[1] प्रारब्ध[2] क्रियमान[3] आधिदैविक[1] पै,
　　आतमिक[2] और आधिभौतिक[3] को जानिये ॥
बिधि[1] हरि[2] हर[3] और सुरसती[1] रमा[2] उमा[3],
　　भूत[1] वर्तमान[2] औ भविष्य[3] पहचानिये ।
तीन गुन[1] राम[2] सु-समीर[3] कर्म[4] ताप[5] देव[6],
　　देवि[7] और काल[8]-भाग 'भक्त' जू बखानिये ॥२७॥

चतुर्कोटि

सत्य त्रेता द्वापर औ कलि द्विज क्षत्री वैश्य,
शूद्र ब्रह्मचर्य औ गृहस्थ बानप्र ा जान।
सनयास साम दाम दंड भेद हय गय,
रथ पदचर जागरित स्वप्न पहच ाँन ॥
'भक्त' जू सुषुप्ति औ तुरीय विश्व तैज । औ,
प्राज्ञ ब्रह्मा पिंडज औ अंडज स्वे ज मान।
उद्भिज महँ चार युग वर्ण आश्रम औ
नृपगुन-सेनाभागावस्थो विभु स ।खान ॥२८॥

काव्य-नवरस

करुणा श्रृंगार हास्य वीर रौद्र शान्त अर
अद्भुत भयानक बीभत्स रस ानिये।
शोक रति हास उतसाह क्रोध निरवेद,
अचरज भय ग्लानि थाईभाव मा ये ॥
वरुण मुरारि शिव इन्द्र रुद्र नारायण,
विधि काल महाकाल देव उर आ ये।
चिनर-कपोत स्याम स्वेत कुन्द रक्त शुक्ल,
पीत केंठा नील रंग 'भक्त' पहचा ये ॥२९॥

हिन्दी-नवग्रह।

नम-अरि-तुल्य 'तुलसी' औ 'सूर' ससि सम
'भक्त'-कंज-कुमुद परमहितू मानिय
'देव' कुज, बुध सों बिहारी रसिकन-प्रान,
'केसौदास' कवि-कुल गुरु उर आनि ॥

'मतिराम' सबहीं सुखद सुक्र के समान,
'भूखन' शनैश्चर यवन-हित जानिये ।
'चन्द' राहु, केतु 'हरिचन्द' ब्रजभाषा कहँ,
ये ही हिन्दी-नभ-नव-ग्रह पहचानिये ॥३०॥

वसु, धातु और अष्टछाप

धरे ध्रुव अनल अनिल सोम सावित्र पै,
गिनिकै प्रत्यूष औ प्रभास बसु मानिये ।
सोनो चाँदी तामो राँगो सीसो काँसो लोहो महँ,
पीतल मिलाइ अष्टधातु को बखानिये ॥
सूरदास नन्ददास छीतस्वामी कृष्णदास,
कुंभन-चतुरभुज दास उर आनिये ।
मेलिकै गोविन्दस्वामी परम+अनन्ददास,
ब्रज-बासी-'भक्त' 'अष्टछाप' कवि जानिये॥३१॥

षोडश संस्कार और कर्म

गर्भाधान पुंसवन सीमन्त औ जातकर्म,
शिशुनामकरण निष्क्रमण बखानिये ॥
'भक्त' जू भनत अन्नप्राशन औ चूड़ाकर्म,
कर्णवेध उपनैन वेदारंभ जानिये ।
ब्रह्मचर्य ब्योह गृहस्थाश्रम द्विरागमन,
बानप्रस्थ महावाक्यपरिअन्त मानिये ॥
सनयासविधि सब संस्कार होमविधि,
मृत कर्म संस्कार-युत उर आनिये ॥३२॥

षोडश दान और रु

महि जल अन्न बस्त्र फल पुष्पमाल से ,
आसन रजत सोन पान छत्र ानिये ।
दीप पद्त्रान गो सुगंधित सुवस्तु द न,
विद्या-दान इन सोरहों तें बड़ ानिये ॥
त्र्यम्बक अजैकपाद रुद्र अपराजित अ
बहुरूप विरूपाक्ष अहिबुध्न्य जा ये ।
सावित्र सुरेश्वर जयन्त हरे हर-काल,
एकादस रुद्र-'भक्त' उर-महँ आ ये ॥३३॥

दिशा, दिग्पाल और पंचत त्र

पूरब में 'इन्द्र' आग्नेय में 'अगिनदेव',
दक्षिण में 'यमराज' मित्र ! अनुम निये ॥
नैऋत्य में 'नैऋत' औ पश्चिम-'वरुणदे ,
वायव्य में 'वायु' घट-घट वारो ज निये ॥
उत्तर में 'धनपति' 'शंकर' ईशान कोन,
ऊपर 'विधाता' नीचे 'विष्णु' उ आनिये ।
छिति जल अनल अनिल नभ 'भक्त' भ
दस दिग्पाल, पंचतत्त्व पहचानिये ।३४॥

दिन, मास और ऋतु

चैत बइसाख में 'बसन्त' की बहार आवे,
जेठ औ असाढ़ 'ग्रीष्म'-दाह दुखद नेये ।
सावन औ भादव में 'पावस' प्रमोद देत,
'सरद' कुआँर और कार्तिक बखा ये ॥

अगहन पूस में 'हेमन्त' सीसी करें लोग,
माघ और फागुन 'सिसिर' अन्त मानिये ।
रवि सोम कुज बुध गुरु शुक्र शनि वार,
वार-वार मास ऋतु करैं 'भक्त' जानिये ॥३५॥

द्विज-गुण रत्न और भक्ति

कोमल दयालु तप तोष क्षमा सर्वज्ञता,
दान-देन-लेन जितेन्द्रियता; यज्ञोपवीत ।
हीरा पन्ना पुष्पराग नीलम गोमेद मोती,
मानिक मूँगा औ लहसुनियाँ को मानों मीत ॥
स्रवन सु-कीरतन सुमिरन पद-सेवा,
अरचन वन्दन ससत्य अरु सुसमीत ।
आतमनिवेदन सुदास्य सख्य सुनु 'भक्त'
नव द्विज-गुन रत्न भक्ति करिबे की रीत ॥३६॥

अंग्रेज़ी महीना

जनवरी फरवरी मार्च अपरैल मई,
जून औ जौलाई पै अगस्त को बताइये ।
'भक्त' जू सितम्बर अक्तूबर नवम्बर पै,
जोरिकै दिसम्बर को ईसवी गनाइये ॥
ज. मा. म. जौ. अग. अक. दिस. एक-तीस कर,
अ. जू. सि. न. तीस दिन-वारो समझाइये ।
फरवरी होत है अट्ठाइसै को हर साल,
किन्तु चौथे वर्ष एक दिवस बढ़ाइये ॥३७॥

मुसलमानी महीनों के नाम और आभरण

'नूपुर' मुहर्रम में 'कंकण' सफर माँझ,
रबी-उल-अव्वल में अव्वल हो 'बाजूबन्द'।
रबी-उस-सानी महँ 'सीसफूल' फूलदार,
जमादी-उल-अव्वल में 'हार' देवै जो अनन्द ॥
जमादी-उस-सानी में 'बिरीया' 'चुरी' रजब में,
'बेसर' शाबान में औ 'टीका'-रमजान-फन्द।
'कंठ-श्री' शव्वाल में औ 'किंकिणी' जीकाद में औ,
भेजौ जिलहज्ज महँ 'मुँदरी' को खुदावन्द ॥३८॥

वेद, शास्त्र, पुराण और वेदांग

ऋक्‍ साम यजुर अथर्व सांख्य पातंजल,
वैशेषिक न्याय पै वेदान्त औ मीमांसा जान।
बामन बराह अग्नि नारद गरुड़ पद्म,
लिंग ब्रह्माण्ड कूर्म ब्रह्मवैवर्त मान।
'भक्त' जू भविष्य भागवत मत्स्य मारकण्ड
ब्रह्म विष्णु शिव स्कन्द वेद शास्त्र औ पुरान।
ज्योतिष निरुक्त छन्द व्याकरण शिक्षा कल्प,
वेद के षडङ्ग निज हियरे में पहचान ॥३९॥

रत्न, विद्या और लोक

शशि धेनु धनु विष बाज रंभा रमा वैद्य,
मद्य मणि संख सुधा गज कल्प-तरु जान।
चार वेद छै वेदांग सुपुराण धर्मशास्त्र,
न्याय औ मीमानसा को याद करु मतिमान ॥

रसातलै सितलै महातलै तलातलै औ,
सुतलै वितलै औ अतलै भूरै भूरै जान ।
स्वैर्ग मेंहजैलें तपै मलै 'भक्त' नृ भवन,
चौदहो रचने विदो ओके हिय पहचान ॥४०॥

षोड्श शृङ्गार

अंगसुचि मज्जनै औ अमल-वसन-रुचि,
जावकै सुकेश को सँवारिबो बखानिये ।
माँग में सु-सेंदुर सु भाल में तिलक देनो,
चिबुक पै तिलै मेंहदी लगानो मानिये ॥
अगजा-अंग-लेपै भूषनै सुगन्धै-सेव,
मुखरागै दन्त को रँगनै पहचानिये ।
काजर लगायेनो अधररागै 'भक्त' भनै,
सोरहो सिंगार 'भक्त' कामिनी को जानिये ॥४१॥

सत्ताइस नक्षत्र

अश्वनी पै भरनी पै कृत्तिका पै रोहिनी पै,
मृगशिरा आर्द्रा पुनर्वसु पहचान ।
पुष्य आशलेषा पै मघा पै पूर्वाफाल्गुनी,
उत्तरा-सु-फाल्गुनी हस्त चित्रा अनुमान ॥
स्वाँती पै विशाखा पर अनुराधा ज्येष्ठा मूलै,
पूर्वाषाढ़ै उत्तर-अषाढ़ै निज उर आन ।
श्रवणै धनिष्ठा शतभिषा पूर्वाभाद्रपदै
उत्तर-सुभाद्रपद रेवती नक्षत्र जान ॥४२॥

इति

पुस्तक मिलने का पता—

पं० राजाराम त्रिपाठी,

ग्राम—मढ़वाँ, पो० आ० शिव ुर,

ब ारस।